License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

1 थिस्सलुनीकियों 1:1–10

पौलुस, सीलास और तीमुथियुस ने यीशु के बारे में थिस्सलुनीके में प्रचार किया था। यह पौलुस की यात्राओं में दूसरी यात्रा के दौरान हुआ था। इस कहानी को प्रेरितों के काम अध्याय 17 में दर्ज किया गया है।

कुछ यहूदी और कई अन्यजातियों यीशु के बारे में संदेश पर विश्वास करते थे। उन्होंने सुसमाचार को आनंद के साथ स्वीकार किया। वे उस बीज के समान थे जो अच्छी भूमि पर गिरा था, जिसके बारे में यीशु ने बात की थी (मत्ती 13:8 और 23)।

यीशु के बारे में सत्य केवल वे शब्द नहीं थे जो पौलुस ने ऊँची आवाज़ में बोले। यह सत्य पवित्र आत्मा की सामर्थ के साथ आया। इस सामर्थ ने थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों के जीवन को बदल दिया। उन्होंने झूठे देवताओं की पूजा को त्याग दिया। वे विश्वास, प्रेम और आशा में दृढ़ हो गए। वे अन्य विश्वासियों के लिए एक आदर्श बन गए।

1 थिस्सलुनीकियों 2:1–16

जब पौलुस, तीमुथियुस और सीलास ने थिस्सलुनीकियों को प्रचार किया, तो वे सच्चे और ईमानदार थे। उन्होंने यह किसी से प्रशंसा पाने के लिए नहीं किया। उन्होंने यह किसी पर नियंत्रण या शक्ति प्राप्त करने के लिए नहीं किया।वे बच्चों की तरह विनम्र और कोमल थे। वे उन माताओं की तरह देखभाल करने वाले थे जो अपने बच्चों से प्रेम करती हैं। वे उन पिताओं की तरह थे जो अपने बच्चों को आशा देते हैं और उन्हें जीवन जीने का मार्ग दिखाते हैं।

उन्होंने कड़ी मेहनत की ताकि थिस्सलुनीकियों को उनकी सहायता न करनी पड़े। कई थिस्सलुनीकियों ने सुसमाचार को स्वीकार किया। जिसने उनके जीवन को बदल दिया। फिर भी, उनके नगर में कुछ लोग इससे प्रसन्न नहीं थे। ये विशेष यहूदी थे जो किसी को भी सुसमाचार सुनाने का विरोध करते थे।

पौलुस और उनके साथियों के साथ फिलिप्पी और थिस्सलुनीके में उनके द्वारा बुरी तरह से व्यवहार किए गए थे। ये यहूदी भी थिस्सलुनीके के विश्वासियों के साथ भी बुरा व्यवहार कर रहे थे।

1 थिस्सलुनीकियों 2:17–3:13

पौलुस, तीमुथियुस और सीलास ने थिस्सलुनीकियों की देखभाल प्रेमपूर्ण माता-पिता की तरह की थी। लेकिन फिर उन्हें खतरे के कारण छोड़ना पड़ा। यह पौलुस और उनके साथियों के लिए बहुत कठिन था।

पौलुस ने कहा कि उन्हें ऐसा लगा जैसे बच्चों ने अपने माता-पिता को खो दिया हो। विश्वासियों के बीच परमेश्वर के परिवार में रिश्ते इतने निकट हो सकते हैं।

पौलुस उनके पास वापस यात्रा नहीं कर सके, इसलिए उन्होंने तीमुथियुस को भेजा। तीमुथियुस ने थिस्सलुनीकियों को प्रोत्साहित किया। उनके द्वारा लाई गई खबर ने पौलुस को प्रोत्साहित किया।

पौलुस आनंद से भर गए क्योंकि थिस्सलुनीके के लोग यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने हुए थे। उनका विश्वास दृढ़ था। वे प्रेम से भरे हुए थे, भले ही वे कठिन समय से गुजर रहे थे।

पौलुस की यह इच्छा थी कि वह फिर से थिस्सलुनीकियों के लोगों से मिल सकें। उनकी प्रार्थना थी कि उनका प्रेम परमेश्वर के प्रति बढ़ता जाए। उन्होंने यह भी प्रार्थना की कि उनका प्रेम एक-दूसरे और सभी लोगों के प्रति बढ़ता रहे।

1 थिस्सलुनीकियों 4:1–12

पौलुस ने विश्वासियों के पवित्र होने के तरीकों का वर्णन किया और पवित्र जीवन जीने के लिए निर्देश दिया।

विश्वासियों को अपने शरीर का उपयोग पवित्रता के साथ करना चाहिए। उन्हें अपने शरीर और दूसरों के शरीर का आदर करना चाहिए। वे ऐसा अपनी लैंगिक इच्छाओं को नियंत्रित करके करते हैं और कभी किसी दूसरे व्यक्ति के शरीर का अनुचित लाभ नहीं उठाते। वे लैंगिक पापों से दूर रहते हैं।

विश्वासियों को अपने नगरों या कस्बों में अपने आचरण में भी पवित्र रहना चाहिए। वे जहाँ भी रहते हैं, उन्हें चीजों को शांतिपूर्ण बनाने में सहायता करनी चाहिए।

विश्वासीगणों को अपने कार्य में भी पवित्र होना चाहिए। उन्हें कड़ी मेहनत करनी चाहिए ताकि वे अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। इस प्रकार वे दूसरों के साथ भी साझा कर सकते हैं।

1 थिस्सलुनीकियों 4:13–18

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों को सांत्वना दी, जो उन लोगों की मृत्यु से दुखी थे। उन्होंने सिखाया कि शोक करने का उनका तरीका भी उन्हें अलग दिखाएगा। पवित्र होने का अर्थ ही अलग किया जाना है। विश्वासियों और अविश्वासियों के शोक में जो अंतर है, वह आशा है।

यीशु के अनुयायियों को आशा है कि मृत्यु जीवन का अंत नहीं है। परमेश्वर के लोग मृतकों में से उठाए जाएंगे। वे उन्हें ऐसा जीवन देंगे जिसे नष्ट नहीं किया जा सकता। ऐसा तब होगा जब यीशु पृथ्वी पर लौटेंगे।

इसका वर्णन करने के लिए, पौलुस ने पुराने नियम से चित्र और शब्दों का उपयोग किया। जब परमेश्वर मूसा के सामने प्रकट हुए थे, तब तेज़ आवाज़ का आदेश और तुरही की ध्वनि सुनाई दी थी (निर्गमन 19:16–19)।

हवा और बादलों में होना उस दर्शन में हुआ जो दानिय्येल ने देखी (दानिय्येल 7:13)। यह दृश्य यीशु के बारे में और उनके राज्य के आरंभ की भविष्यवाणी थी।

विश्वासियों को यह सांत्वना है कि यीशु के सभी अनुयायी उनके साथ सदा के लिए रहेंगे।

1 थिस्सलुनीकियों 5:1–11

कोई नहीं जानता कि यीशु पृथ्वी पर कब लौटेंगे। पौलुस ने उस समय को "प्रभु का दिन" कहा।

इसे समझाने के लिए, पौलुस ने यीशु के उन शब्दों का उपयोग किया जो प्रसव पीड़ा और रात के चोरों के बारे में थे (मत्ती 24:8 और 43)। पौलुस ने यीशु की वापसी को अंधकार और रात के समय के अंत के रूप में वर्णित किया।

उन्होंने यीशु की वापसी को प्रकाश और दिन की शुरुआत के रूप में भी वर्णित किया। पौलुस चाहते थे कि थिस्सलुनीकियों उस समय की आशा के साथ प्रतीक्षा करें।

उनकी आशा मजबूत होनी चाहिए और उन्हें एक टोप की तरह सुरक्षा देनी चाहिए। विश्वास और प्रेम उनके आध्यात्मिक कवच थे।

थिस्सलुनीकियों को अपनी आशा, विश्वास और प्रेम के माध्यम से एक-दूसरे को प्रोत्साहित करना था।

1 थिस्सलुनीकियों 5:12–28

पौलुस ने पवित्र जीवन जीने के लिए विश्वासियों को मिलने वाली सहायता का वर्णन किया। उन्हें कलीसिया के अगुएं लोग से सहायता मिलती है। अगुएं लोग को मेहनत से काम करना चाहिए और विश्वासियों की देखभाल करनी चाहिए, जैसे कि पौलुस ने की थी।

विश्वासियों को पूरी समुदाय से भी सहायता मिलती है। पूरा समूह एक-दूसरे की देखभाल करता है। उन्हें गलत करने वालों को चेतावनी देनी चाहिए और एक-दूसरे के प्रति धैर्यवान रहना चाहिए। उन्हें एक-दूसरे की मदद और प्रोत्साहन करना चाहिए। एक-दूसरे के लिए अच्छा करने में और भी बहुत सी बातें शामिल हैं।

विश्वासियों को परमेश्वर से भी सहायता मिलती है। विश्वासियों के लिए अपने आप को पवित्र बनाना संभव नहीं है। परमेश्वर का आत्मा उनके अंदर काम करता है। विश्वासियों को परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए कि वह उनके अंदर अपना कार्य करेगा। परमेश्वर अपने लोगों के प्रति विश्वासयोग्य है और उन्हें अपनी शांति और अनुग्रह से भर देते हैं।